शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

देवनागरी लिपि की आवश्यकता

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

भारत की आजादी के साथ यह प्रश्न गंभीर होता गया कि इस देश की अधिकृत भाषा कौन-सी है ? आजादी आंदोलन में हिंदी ने संपर्क भाषा के रूप में पूरे देश को एकसूत्र में पिरोने की महती जिम्मेदारी का निर्वाह किया। हिंदी भाषा को अहिंदी भाषी विद्वानों ने निरंतर समृद्ध किया। भाषायी आधार पर प्रांतों के गठन के बाद प्रांतीयता के जोर के आगे हिंदी भाषा अपनाने को लेकर विवाद की स्थितियां बनती रहीं। आज भी जब देश में एक राष्ट्र एक भाषा की बात की जाती है तो अन्य प्रांत उसका मुखर विरोध करते हैं। वे अपने आपको असहज स्थिति में पाते हैं। राजनीतिक मजबूरियों के चलते भी स्थानीय नेतृत्व हिंदी को स्वीकार करने से इंकार करने लगता है। भारत की समृद्ध भाषाओं में आपस में द्वंद्व दिखाई देने लगता है। कभी पूरे भारत में संस्कृत भाषा का एकछत्र राज्य था। देश के हर प्रांत के मनीषियों ने साहित्य रचना संस्कृत भाषा में की है। भले ही उनकी मातृभाषा कुछ भी क्यों न रही हो। इसका एक बहुत बड़ा कारण संस्कृत भाषा की लिपि देवनागरी होना था। एक लिपि सीख लेने के बाद उनके लिए अपने विचार संस्कृत में अभिव्यक्त करना आसान हो गया। ऐसे ही मराठी भाषा ने भी अपनी लिपि देवनागरी रखी। इससे उस भाषा ने भी काफी विस्तार पाया। लेकिन ऐसा अन्य भाषाओं के साथ नहीं हो पाया। अपनी लिपि के आग्रह से देश के अन्य प्रांतों की भाषाएं वहीं पर सिमट कर रह गयीं। वर्तमान में वह भारत की एकता के बीच दीवार बनकर खड़ी हो गयी है। आज यदि कोई हिंदी भाषी देश की अन्य भाषाओं को सीखना चाहता है, तो उसके सामने लिपि की समस्या खड़ी हो जाती है। उसे पहले लिपि सीखना है फिर भाषा सीख सकता है। इस दोहरे दबाव में उसकी भाषा सीखने की इच्छा समाप्त हो जाती है। अनेक लोग भाषा और लिपि को एक ही मानकर व्यवहार करते हैं। इससे भी देश में भ्रम फैला हुआ है। जैसे अंग्रेजी भाषा है और उसकी लिपि रोमन है, हिंदी भाषा है उसकी लिपि देवनागरी है। अपनी प्रांतीय लिपि कायम रखते हुए यदि देश में हिंदी भाषा के विस्तार पर जोर देने की बजाय देवनागरी लिपि अपनाने की बात की जाये तो भाषायी संघर्ष से मुक्त हुआ जा सकता है। आज भाषाएं देश को जोड़ने के स्थान पर तोड़ने का काम कर रही हैं। प्रांतीयता की भावना दिनोंदिन बलवती होती जा रही है। आजादी आंदोलन में हिंदी के सहारे हमने जिन बंधनों को ढीला किया था, आज वे मजबूत होकर हिंदी के विरोध में खड़े हो गए हैं। ऐसी स्थिति में देवनागरी लिपि अपनाने का विवेकपूर्वक आग्रह किया जाए। तीन साल बाद भारत देश अपनी आजादी की 75वीं वर्षगांठ मनाएगा। देश के भाषा प्रेमियों को ये तीन साल देवनागरी लिपि के प्रचार-प्रसार में लगाने की आवश्यकता है। अपने देश में यह सिद्ध हो जाने पर देवनागरी लिपि विश्व में स्थापित होने का दावा करने की स्थिति में होगी। तब अंग्रेजी भाषा के लिखित और मौखिक रूप में होने वाली विसंगति को भी दूर किया जा सकेगा। देवनागरी लिपि में विश्वनागरी बनने की क्षमता है।

सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।